BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

मुगलकालीन भारत में मध्यम वर्ग की संस्कृति : कला और साहित्य के संदर्भ में

अंकित कुमार सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग
पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया, बिहार

प्रस्तावना

मुगलकाल (1526–1857 ई.) भारतीय इतिहास का एक ऐसा युग है, जिसने कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में अभूतपूर्व समृद्धि देखी। यह काल न केवल शाही वैभव और भव्य स्मारकों के लिए जाना जाता है, बल्कि मध्यम वर्ग की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए भी उल्लेखनीय है। मध्यम वर्ग, जिसमें व्यापारी, नौकरशाह, कारीगर, विद्वान और छोटे जमींदार शामिल थे, ने मुगलकालीन समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया। यह वर्ग न तो शाही कुलीन वर्ग की तरह ऐश्वर्यशाली था और न ही निम्न वर्ग की तरह संसाधन–विहीन, बल्कि इसने अपनी आर्थिक स्थिरता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता के बल पर कला और साहित्य में विशिष्ट योगदान दिया।

मध्यम वर्ग ने शाही संरक्षण से प्रेरित होकर, स्थानीय परंपराओं के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए लघु चित्रकला, वास्तुकला, और शिल्प को बढ़ावा दिया। साथ ही, फारसी, उर्दू, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य सृजन के माध्यम से इस वर्ग ने अपनी वैचारिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति को व्यक्त किया। भक्ति और सूफी साहित्य, लोक कथाएँ, और उर्दू गजलें मध्यम वर्ग के बीच लोकप्रिय थीं, जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता और सौंदर्यबोध को दर्शाती थीं। शहरों जैसे दिल्ली, आगरा, लाहौर और लखनऊ में केंद्रित यह वर्ग शाही दरबारों और स्थानीय बाजारों के बीच एक सेतु का काम करता था। इस आलेख का उद्देश्य मध्यम वर्ग की सांस्कृतिक भूमिका को कला और साहित्य के संदर्भ में विश्लेषित करना है। यह वर्ग न केवल शाही प्रभाव को आत्मसात करता था, बल्कि अपनी मौलिकता के माध्यम से सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध भी करता था। मध्यम वर्ग की यह सांस्कृतिक यात्रा मुगलकालीन भारत की सामाजिक गतिशीलता और सृजनात्मकता का एक जीवंत उदाहरण है, जो आज भी भारतीय संस्कृति की विविधता को समझने में महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द :– भावनात्मक, संस्कृति, साहित्य, बौद्धिक, सहिष्णुता, परिदृश्य।

मध्यम वर्ग का सामाजिक परिदृश्य

मुगलकाल (1526–1857 ई.) में मध्यम वर्ग भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण और गतिशील हिस्सा था। इस वर्ग में व्यापारी, नौकरशाह, कारीगर, विद्वान और छोटे जमींदार शामिल थे, जो न तो शाही कुलीन वर्ग के वैभव से युक्त थे और न ही निम्न वर्ग की तरह संसाधन–विहीन। मध्यम वर्ग ने आर्थिक स्थिरता और सामाजिक प्रभाव के साथ मुगलकालीन संस्कृति को समृद्ध किया। यह वर्ग मुख्य रूप से शहरी केंद्रों जैसे दिल्ली, आगरा, लाहौर और लखनऊ में सक्रिय था, जहाँ व्यापार, प्रशासन और कला–संस्कृति का संगम देखने को मिलता था।मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति ने इसे शाही दरबारों और स्थानीय बाजारों के बीच एक सेतु बनाया। व्यापारी व्यापारिक मार्गों और बाजारों के माध्यम से समृद्धि अर्जित करते थे, जबकि नौकरशाह और विद्वान प्रशासनिक और बौद्धिक क्षेत्रों में योगदान देते थे। कारीगरों ने चित्रकला, वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प में अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया। इस वर्ग की सामाजिक गतिशीलता ने इसे धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता का प्रतीक बनाया। हिंदू, मुस्लिम और अन्य समुदायों के लोग इस वर्ग में शामिल थे, जो भक्ति और सूफी विचारधाराओं के माध्यम से एक–दूसरे के साथ जुड़े। मध्यम वर्ग ने सामुदायिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हवेलियों, छोटी मस्जिदों और बागों के निर्माण में इस वर्ग का योगदान उल्लेखनीय था। ये स्थान न केवल उनकी आर्थिक समृद्धि को दर्शाते थे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों

@2025 Bihar Shodh Samaagam

के केंद्र भी थे। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने मुगलकालीन समाज में एक संतुलित और समन्वित सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण किया, जो कला और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

कला के संदर्भ में मध्यम वर्ग की भूमिका

मुगल काल में कला का एक नया रूप विकसित हुआ, जिसमें पारंपरिक भारतीय कला और इस्लामी कला की मिश्रण देखा गया। मुगलों ने चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला और वस्त्रकला में एक नया मोड़ दिया। इस समृद्ध कला के विकास में मुगली मध्यवर्ग का महत्वपूर्ण योगदान था :—

1. चित्रकला

मुगलकाल (1526—1857 ई.) में चित्रकला भारतीय कला का एक शानदार अध्याय थी, और मध्यम वर्ग ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया। यद्यपि मुगल चित्रकला मुख्य रूप से शाही संरक्षण के अंतर्गत विकसित हुई, मध्यम वर्ग, जिसमें व्यापारी, नौकरशाह और कारीगर शामिल थे, ने इस कला को अपनाकर इसे लोकप्रिय और विविध बनाया। मुगल चित्रकला की विशेषता थी इसकी सूक्ष्मता, रंगों की जीवंतता और यथार्थवादी शैली, जो मध्यम वर्ग के सौंदर्यबोध से मेल खाती थी। इस वर्ग के कारीगरों और चित्रकारों ने लघु चित्रों (मिनिएचर पेंटिंग्स) के निर्माण में विशेष योगदान दिया, जो शाही दरबारों के साथ—साथ धनी व्यापारियों और विद्वानों के लिए बनाए जाते थे। मध्यम वर्ग ने रागमाला चित्रों, भक्ति और सूफी कथाओं, और दैनिक जीवन के दृश्यों को चित्रित करने में रुचि दिखाई। रागमाला चित्र, जो संगीत के रागों को दृश्य रूप में प्रस्तुत करते थे, मध्यम वर्ग के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय थे। ये चित्र न केवल सौंदर्यपूर्ण थे, बल्कि संगीत और कला के बीच एक गहरा संबंध भी स्थापित करते थे। इसके अतिरिक्त, मध्यम वर्ग ने स्थानीय शैलियों, जैसे राजपूत और पहाड़ी चित्रकला, को अपनाया और उन्हें मुगल शैली के साथ समन्वित किया। राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में विकसित पहाड़ी चित्रकला में मध्यम वर्ग के संरक्षण ने भक्ति कथाओं, जैसे कृष्ण—लीला और रामायण के दृश्यों, को जीवंत किया। ये चित्र धार्मिक भावनाओं के साथ—साथ मध्यम वर्ग की सांस्कृतिक संवेदनशीलता को भी दर्शाते थे।

मध्यम वर्ग के चित्रकारों ने तकनीकी नवाचारों को भी अपनाया, जैसे कि कागज पर चित्रण और प्राकृतिक रंगों का उपयोग। ये चित्र प्रायः हवेलियों और निजी संग्रहों में प्रदर्शित किए जाते थे, जो मध्यम वर्ग की सामाजिक स्थिति को उजागर करते थे। इस वर्ग ने चित्रकला को न केवल एक कला के रूप में, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के साधन के रूप में भी देखा। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने मुगलकालीन चित्रकला को एक समृद्ध और समावेशी स्वरूप प्रदान किया, जो शाही और स्थानीय परंपराओं का अनूठा मिश्रण था।

2. वास्तुकला

मुगलकालीन वास्तुकला अपने भव्य स्मारकों, जैसे ताजमहल और लाल किला, के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन मध्यम वर्ग ने भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मध्यम वर्ग, जिसमें व्यापारी, छोटे जमींदार और नौकरशाह शामिल थे, ने छोटे पैमाने की वास्तुकला, जैसे हवेलियाँ, मस्जिदें, और बागों, के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई। ये संरचनाएँ न केवल उनकी आर्थिक समृद्धि को दर्शाती थीं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को भी व्यक्त करती थीं। मध्यम वर्ग की हवेलियाँ, विशेष रूप से दिल्ली, लखनऊ और आगरा जैसे शहरों में, उनकी सौंदर्य चेतना का प्रतीक थीं। ये हवेलियाँ प्रायः जटिल नक्काशी, मेहराबों और आंगनों के साथ डिजाइन की जाती थीं, जो मुगल वास्तुकला की विशेषताओं को अपनाते हुए स्थानीय शैलियों को भी शामिल करती थीं। उदाहरण के लिए, लखनऊ की नदबाबी हवेलियाँ और राजस्थान की व्यापारी कोठियाँ मध्यम वर्ग की समृद्धि और कलात्मक रुचि को दर्शाती थीं। ये संरचनाएँ सामुदायिक गतिविधियों, जैसे साहित्यिक सभाओं और धार्मिक समारोहों, के लिए केंद्र भी थीं।

मध्यम वर्ग ने छोटी मस्जिदों और मकबरों के निर्माण में भी योगदान दिया। ये संरचनाएँ भले ही शाही स्मारकों की तरह भव्य न हों, लेकिन इनमें मुगल वास्तुकला की विशेषताएँ, जैसे गुंबद, मेहराबें और ज्यामितीय डिजाइन, स्पष्ट दिखाई देती थीं। इसके अतिरिक्त, मध्यम वर्ग ने बाग–बगीचों के निर्माण को प्रोत्साहित किया। चारबाग शैली, जो मुगल वास्तुकला की एक प्रमुख विशेषता थी, को मध्यम वर्ग ने अपने निजी बगीचों में अपनाया। ये बगीचे न केवल सौंदर्य के लिए थे, बल्कि सामाजिक मेलजोल और विश्राम के स्थान भी थे। कारीगरों, जो अधिकांशतः मध्यम वर्ग का हिस्सा थे, ने पत्थर की नक्काशी, जाली कार्य और टाइल निर्माण में अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया। इन कारीगरों ने शाही परियोजनाओं के साथ–साथ मध्यम वर्ग की माँगों को भी पूरा किया। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने मुगलकालीन वास्तुकला को एक व्यापक और समावेशी स्वरूप प्रदान किया, जो शाही और स्थानीय परंपराओं का मिश्रण था।

3. संगीत और नृत्य

मुगलकाल में संगीत और नृत्य भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग थे, और मध्यम वर्ग ने इन कला रूपों को अपनाकर और संरक्षण देकर इन्हें समृद्ध किया। यद्यपि शाही दरबारों में संगीत और नृत्य का प्रदर्शन उच्च स्तर पर होता था, मध्यम वर्ग ने इन कलाओं को अपने सामाजिक और धार्मिक जीवन का हिस्सा बनाया। व्यापारी, नौकरशाह और विद्वानों ने संगीत और नृत्य को न केवल मनोरंजन के साधन के रूप में, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान और भक्ति भावना के अभिव्यक्ति के रूप में भी देखा। मध्यम वर्ग ने ध्रुपद, ख्याल और ठुमरी जैसे संगीतमय रूपों को प्रोत्साहित किया। ध्रुपद, जो एक शास्त्रीय संगीत शैली थी, मध्यम वर्ग के धार्मिक और आध्यात्मिक झुकाव को दर्शाता था। ख्याल और ठुमरी, जो अधिक लचीले और भावनात्मक थे, मध्यम वर्ग के बीच लोकप्रिय हो गए, विशेष रूप से लखनऊ और दिल्ली जैसे शहरों में। इन संगीत रूपों को प्रायः हवेलियों और निजी सभाओं में प्रस्तुत किया जाता था, जहाँ मध्यम वर्ग के लोग अपनी सांस्कृतिक रुचि का प्रदर्शन करते थे। तानसेन जैसे संगीतकारों की प्रसिद्धि ने मध्यम वर्ग को भी संगीत के प्रति प्रेरित किया।

नृत्य के क्षेत्र में, मध्यम वर्ग ने कथक को विशेष रूप से संरक्षण दिया। कथक, जो भक्ति और प्रेम कथाओं पर आधारित था, मध्यम वर्ग के सौंदर्यबोध और धार्मिक भावनाओं के साथ मेल खाता था। यह नृत्य शैली मंदिरों से निकलकर हवेलियों और सामाजिक सभाओं में लोकप्रिय हुई। मध्यम वर्ग के संरक्षण ने कथक को एक परिष्कृत रूप प्रदान किया, जिसमें मुगल और स्थानीय तत्वों का समन्वय था। इसके अतिरिक्त, मध्यम वर्ग ने लोक नृत्यों, जैसे भांगड़ा और गिद्दा, को भी प्रोत्साहित किया, जो सामुदायिक उत्सवों का हिस्सा थे। मध्यम वर्ग ने संगीत और नृत्य के प्रशिक्षण और प्रदर्शन के लिए कला केंद्रों और गुरु–शिष्य परंपरा को बढ़ावा दिया। ये प्रयास न केवल सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते थे, बल्कि मध्यम वर्ग की सामाजिक एकता और सौंदर्य चेतना को भी उजागर करते थे। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने मुगलकालीन संगीत और नृत्य को एक समावेशी और जीवंत स्वरूप प्रदान किया।

साहित्य के संदर्भ में मध्यम वर्ग की भूमिका

मुगल काल में साहित्य का एक अद्वितीय उन्नति हुआ, खासकर फारसी, अरबी और हिंदी भाषाओं में। इस समय के साहित्य में शाही दरबार के प्रभाव के साथ–साथ मध्यवर्ग के लोग भी साहित्यिक गतिविधियों में शामिल हुए :–

1. फारसी साहित्य

मुगलकाल (1526–1857 ई.) में फारसी साहित्य मुगल दरबार की आधिकारिक भाषा के रूप में प्रमुख था, और मध्यम वर्ग ने इसके सृजन और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मध्यम वर्ग, जिसमें नौकरशाह, विद्वान, व्यापारी और छोटे जमींदार शामिल थे, ने फारसी को न केवल प्रशासनिक कार्यों के लिए अपनाया, बल्कि इसे साहित्यिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी बनाया। इस वर्ग की सांस्कृतिक और बौद्धिक महत्वाकांक्षा ने फारसी साहित्य को शाही दरबारों से बाहर, समाज के व्यापक स्तर तक

पहुँचाया। मध्यम वर्ग के विद्वानों ने ऐतिहासिक ग्रंथ, आत्मकथाएँ, और काव्य रचनाएँ लिखीं। उदाहरण के लिए, अब्दुल कादिर बदायूनी जैसे विद्वानों ने मुंतखब–उत–तवारीख जैसे ग्रंथों में मुगल इतिहास को मध्यम वर्ग के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। ये रचनाएँ न केवल ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण देती थीं, बल्कि सामाजिक और धार्मिक मूल्यों को भी दर्शाती थीं। मध्यम वर्ग ने फारसी काव्य में भी योगदान दिया, विशेष रूप से मसनवी और गजल जैसे रूपों में, जो प्रेम, दर्शन और आध्यात्मिकता की थीम पर आधारित थे। ये रचनाएँ मध्यम वर्ग की बौद्धिक गहराई और सौंदर्यबोध को उजागर करती थीं।

फारसी साहित्य को मध्यम वर्ग ने अपने सामाजिक मेलजोल के लिए भी उपयोग किया। शहरों जैसे दिल्ली, आगरा और लाहौर में साहित्यिक सभाएँ आयोजित की जाती थीं, जहाँ मध्यम वर्ग के लोग फारसी काव्य का पाठ और चर्चा करते थे। इन सभाओं ने फारसी साहित्य को लोकप्रिय बनाने में मदद की। मध्यम वर्ग ने फारसी में अनुवाद कार्यों को भी प्रोत्साहित किया, जैसे कि संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद, जो हिंदू–मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय को दर्शाता था। उदाहरण के लिए, महाभारत और रामायण के फारसी अनुवाद मध्यम वर्ग के संरक्षण में तैयार किए गए।इसके अतिरिक्त, मध्यम वर्ग ने फारसी साहित्य को शिक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से भी बढ़ावा दिया। मदरसों और निजी शिक्षण केंद्रों में फारसी साहित्य पढ़ाया जाता था, जिससे मध्यम वर्ग के युवा इस भाषा में पारंगत हो सके। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने फारसी साहित्य को न केवल एक साहित्यिक परंपरा के रूप में, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के साधन के रूप में भी स्थापित किया। इस योगदान ने मुगलकालीन भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को और गहरा किया।

2. हिंदी साहित्य

मुगलकाल में हिंदी साहित्य, विशेष रूप से भक्ति और रीति काव्य, मध्यम वर्ग के बीच अत्यंत लोकप्रिय था। मध्यम वर्ग, जिसमें व्यापारी, कारीगर और विद्वान शामिल थे, ने हिंदी साहित्य को संरक्षण देकर इसे सामाजिक और धार्मिक अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम बनाया। हिंदी साहित्य ने इस वर्ग की भावनाओं, मूल्यों और सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो शाही फारसी साहित्य से भिन्न और अधिक जनसुलभ था। भक्ति काव्य मध्यम वर्ग के बीच विशेष रूप से प्रभावशाली था। कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई जैसे कवियों ने हिंदी और अवधी में रचनाएँ कीं, जो मध्यम वर्ग के धार्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करती थीं। तुलसीदास की रामचरितमानस ने मध्यम वर्ग के बीच धार्मिक चेतना को प्रेरित किया और सामाजिक एकता को बढ़ावा दिया। कबीर की दोहों में सामाजिक समानता और आध्यात्मिकता का संदेश था, जो मध्यम वर्ग के हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों को आकर्षित करता था। ये रचनाएँ सरल भाषा में थीं, जिससे मध्यम वर्ग के लोग इन्हें आसानी से समझ और सराह सकते थे।

मध्यम वर्ग ने हिंदी साहित्य को सामुदायिक सभाओं और धार्मिक आयोजनों में लोकप्रिय बनाया। मंदिरों, हवेलियों और बाजारों में भक्ति काव्य का पाठ और कीर्तन आयोजित किए जाते थे, जो मध्यम वर्ग की सांस्कृतिक गतिविधियों का हिस्सा थे। इसके अतिरिक्त, रीति काव्य, जो प्रेम और सौंदर्य पर केंद्रित था, मध्यम वर्ग के सौंदर्यबोध को दर्शाता था। बिहारी और मतिराम जैसे कवियों ने रीति काव्य को परिष्कृत किया, जो मध्यम वर्ग की हवेलियों और साहित्यिक सभाओं में सराहा जाता था। हिंदी साहित्य ने मध्यम वर्ग की सामाजिक गतिशीलता को भी दर्शाया। इस वर्ग ने स्थानीय भाषाओं और परंपराओं को अपनाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, जो मुगलकालीन भारत की बहुसांस्कृतिक प्रकृति को उजागर करता था। मध्यम वर्ग के संरक्षण ने हिंदी साहित्य को एक ऐसी पहचान दी, जो शाही दरबारों से स्वतंत्र थी और जनमानस से सीधे जुड़ी थी। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने हिंदी साहित्य को एक समावेशी और जीवंत स्वरूप प्रदान किया।

3. काव्य और शेरो–शायरी

मुगलकाल में काव्य और शेरो–शायरी मध्यम वर्ग की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। इस वर्ग ने उर्दू और फारसी में शेरो–शायरी को अपनाया और इसे अपने सामाजिक और बौद्धिक जीवन का अभिन्न अंग बनाया। उर्दू, जो मुगलकाल में विकसित हुई, मध्यम वर्ग की साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक प्रमुख माध्यम बनी। मीर तकी मीर, मिर्जा गालिब और दाग देहलवी जैसे शायरों ने गजल और नज्म के माध्यम से प्रेम, दर्शन, और सामाजिक टिप्पणियाँ प्रस्तुत कीं, जो मध्यम वर्ग के बीच अत्यंत लोकप्रिय थीं। शेरो–शायरी मध्यम वर्ग की भावनात्मक और बौद्धिक गहराई को दर्शाती थी। गजलें, जो प्रायः प्रेम और विरह की थीम पर आधारित थीं, मध्यम वर्ग के सौंदर्यबोध और संवेदनशीलता को व्यक्त करती थीं। मीर की गजलें, जैसे "दिल–ए–नादाँ तुझे हुआ क्या है," मध्यम वर्ग के बीच अपनी सरलता और गहनता के लिए प्रिय थीं। मध्यम वर्ग ने मुशायरों को प्रोत्साहित किया, जो शहरों जैसे दिल्ली और लखनऊ में आयोजित किए जाते थे। इन मुशायरों में व्यापारी, नौकरशाह और विद्वान हिस्सा लेते थे, जिससे शेरो–शायरी एक सामुदायिक गतिविधि बन गई।

मध्यम वर्ग ने सूफी काव्य को भी संरक्षण दिया, जो आध्यात्मिकता और प्रेम को जोड़ता था। अमीर खुसरो जैसे कवियों ने फारसी और हिंदी के मिश्रण से रचनाएँ कीं, जो मध्यम वर्ग की धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाती थीं। इसके अतिरिक्त, मध्यम वर्ग ने लोक काव्य को भी प्रोत्साहित किया, जैसे कि कव्वालियाँ और दोहे, जो सामाजिक और धार्मिक एकता को बढ़ावा देते थे। शेरो–शायरी ने मध्यम वर्ग को अपनी सामाजिक स्थिति और बौद्धिक क्षमता को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया। यह कला रूप न केवल मनोरंजन का साधन था, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संवाद का भी माध्यम था। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने काव्य और शेरो–शायरी को मुगलकालीन साहित्य का एक चमकता हुआ रत्न बनाया, जो उनकी सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करता था।

मुगल समाज में कला और साहित्य का मध्यम वर्ग पर प्रभाव

मुगलकाल (1526–1857 ई.) में कला और साहित्य ने मध्यम वर्ग, जिसमें व्यापारी, नौकरशाह, कारीगर और विद्वान शामिल थे, पर गहरा प्रभाव डाला। इस वर्ग ने शाही संरक्षण से प्रेरित कला और साहित्य को अपनाकर अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक पहचान को समृद्ध किया। मुगल चित्रकला, वास्तुकला, संगीत और साहित्य ने मध्यम वर्ग को सौंदर्यबोध, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक एकता की भावना प्रदान की, जिसने उनके जीवन को गहराई से प्रभावित किया।

मुगल चित्रकला, विशेष रूप से लघु चित्रों, ने मध्यम वर्ग के सौंदर्यबोध को निखारा। रागमाला, भक्ति और सूफी कथाओं के चित्र उनके घरों और हवेलियों में सजावट के रूप में उपयोग किए गए, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ी।

वास्तुकला में, मध्यम वर्ग ने हवेलियों और छोटी मस्जिदों के निर्माण को प्रेरित किया, जो उनकी आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक रुचि को दर्शाता था। ये संरचनाएँ सामुदायिक सभाओं और सांस्कृतिक आयोजनों के केंद्र बनीं, जिससे मध्यम वर्ग का सामाजिक जीवन समृद्ध हुआ। संगीत और नृत्य, जैसे कथक और ख्याल, ने मध्यम वर्ग को भावनात्मक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का अवसर दिया। हवेलियों में आयोजित संगीतमय सभाओं और मुशायरों ने मध्यम वर्ग को सांस्कृतिक रूप से सक्रिय और एकजुट बनाया। साहित्य ने मध्यम वर्ग की बौद्धिक और नैतिक चेतना को आकार दिया। फारसी साहित्य ने नौकरशाहों और विद्वानों को बौद्धिक गहराई प्रदान की, जबकि उर्दू गजलें और भक्ति काव्य, जैसे तुलसीदास और कबीर की रचनाएँ, उनकी धार्मिक और सामाजिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देती थीं। ये रचनाएँ सरल और जनसुलभ थीं, जिससे मध्यम वर्ग इन्हें अपने दैनिक जीवन में शामिल कर सका। भक्ति और सूफी साहित्य ने हिंदू–मुस्लिम एकता को प्रोत्साहित किया, जिसने मध्यम वर्ग में सहिष्णुता और समन्वय की भावना को बल दिया। कला और साहित्य ने मध्यम वर्ग को शाही संस्कृति और स्थानीय परंपराओं के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित किया। इसने न केवल उनकी सांस्कृतिक रुचियों को समृद्ध किया, बल्कि सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक स्थिरता को भी बढ़ावा दिया। मध्यम वर्ग ने कला और साहित्य के माध्यम से अपनी पहचान को मजबूत

किया, जो मुगलकालीन समाज की बहुसांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। इस प्रकार, कला और साहित्य ने मध्यम वर्ग को एक समृद्ध और जीवंत सांस्कृतिक जीवन प्रदान किया।

निष्कर्ष

मुगलकाल (1526–1857 ई.) भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम युग था, जिसमें कला और साहित्य ने न केवल शाही वैभव को दर्शाया, बल्कि मध्यम वर्ग की सांस्कृतिक और बौद्धिक क्षमताओं को भी उजागर किया। मध्यम वर्ग, जिसमें व्यापारी, नौकरशाह, कारीगर, विद्वान और छोटे जमींदार शामिल थे, ने कला और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देकर मुगलकालीन समाज की बहुसांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया। इस वर्ग ने शाही संरक्षण से प्रेरित होकर स्थानीय परंपराओं के साथ सामंजस्य स्थापित किया, जिससे एक अनूठा सांस्कृतिक परिदृश्य उभरा।

चित्रकला में, मध्यम वर्ग ने लघु चित्रों (मिनिएचर पेंटिंग्स) को अपनाकर रागमाला, भक्ति और सूफी कथाओं को जीवंत किया। राजपूत और पहाड़ी शैलियों के समन्वय ने इस वर्ग के सौंदर्यबोध और धार्मिक संवेदनशीलता को दर्शाया। वास्तुकला में, हवेलियों, छोटी मस्जिदों और चारबाग शैली के बगीचों के निर्माण ने मध्यम वर्ग की आर्थिक समृद्धि और सामाजिक स्थिति को उजागर किया। ये संरचनाएँ सामुदायिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बनीं, जो मध्यम वर्ग के सामाजिक जीवन को समृद्ध करती थीं। संगीत और नृत्य, विशेष रूप से कथक, ख्याल और ठुमरी, ने मध्यम वर्ग को भावनात्मक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया। हवेलियों और सभाओं में आयोजित संगीतमय और नृत्य प्रदर्शन इस वर्ग की सांस्कृतिक सक्रियता का प्रतीक थे।

साहित्य में, मध्यम वर्ग ने फारसी, उर्दू, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में रचनाएँ कीं। फारसी ग्रंथों, जैसे अब्दुल कादिर बदायूनी के ऐतिहासिक कार्य, ने बौद्धिक गहराई प्रदान की, जबकि उर्दू गजलें, जैसे मीर तकी मीर और मिर्जा गालिब की रचनाएँ, प्रेम और दर्शन को व्यक्त करती थीं। भक्ति और सूफी साहित्य, जैसे कबीर, सूरदास और तुलसीदास की रचनाएँ, मध्यम वर्ग के धार्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करती थीं। ये रचनाएँ सरल और जनसुलभ थीं, जिससे मध्यम वर्ग इन्हें अपने दैनिक जीवन और सामुदायिक आयोजनों में शामिल कर सका। लोक कथाएँ और कव्वालियाँ भी इस वर्ग के बीच लोकप्रिय थीं, जो मनोरंजन के साथ–साथ सामाजिक एकता को बढ़ावा देती थीं।

मध्यम वर्ग ने कला और साहित्य को न केवल संरक्षण दिया, बल्कि इन्हें अपनी सामाजिक गतिशीलता, धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक पहचान का माध्यम बनाया। इस वर्ग ने शाही और स्थानीय परंपराओं के बीच एक सेतु का काम किया, जिससे मुगलकालीन भारत की सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि को नया आयाम मिला। मध्यम वर्ग की यह सांस्कृतिक यात्रा न केवल तत्कालीन समाज की बहुसांस्कृतिक प्रकृति को दर्शाती है, बल्कि आज भी हमें सांस्कृतिक समन्वय और रचनात्मकता की प्रेरणा देती है। इस प्रकार, मध्यम वर्ग ने मुगलकालीन कला और साहित्य को एक समावेशी, जीवंत और चिरस्थायी विरासत प्रदान की, जो भारतीय संस्कृति का एक अमूल्य हिस्सा है।

संदर्भ सूची

1. चंद्र, सतीश (2007), मध्यकालीन भारतरू सल्तनत से मुगल, जवाहर पब्लिशर्स, दिल्ली।
2. शर्मा, राम शरण (2005), भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. त्रिपाठी, राम प्रसाद (1990), मुगलकालीन भारत में कला और संस्कृति, हिंदुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. मिश्रा, रेखा (2010), मुगलकालीन चित्रकला, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. सक्सेना, बी. पी. (2003), मुगलकालीन साहित्य और संस्कृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. वर्मा, भगवत शरण (1998), मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
7. रिजवी, सैयद अतहर अब्बास (1975), मुगल भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. पांडे, गोविंद चंद्र (2001), भक्ति आंदोलन और हिंदी साहित्य, विद्यामंदिर, पटना।
9. शर्मा, सुनीति (2012), मुगलकालीन वास्तुकला, साहित्य भवन, आगरा।
10. गुप्त, परमानंद (1995), उर्दू साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. सिंह, विजय (2008), मध्यकालीन भारत में कला और साहित्य, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
12. मिश्रा, सुदर्शन (2015), मुगलकालीन संगीत और नृत्य, स्वराज प्रकाशन, लखनऊ।
13. यादव, राम नरेश (2000), हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
14. खान, यूसुफ हुसैन (1987), मुगलकालीन भारत की सांस्कृतिक झलक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
15. शर्मा, कृष्ण कुमार (2018), मध्यकालीन भारतरू कला, संस्कृति और साहित्य, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।